आचार्य अपराजितसूरि

जीवन-परिचय : अपराजितसूरि यापनीय संघ के विद्वान थे। वे चन्द्रनन्दि महाकर्मप्रकृत्याचार्य के प्रशिष्य और बलदेवसूरि के शिष्य थे। ये भारतीय आचार्यों के चूड़ामणि थे। जिनशासन का उद्धार करने में धीर, वीर तथा यशस्वी थे। इन्हें नागनन्दिगणि के चरणों की सेवा से ज्ञान प्राप्त हुआ था और श्रीनन्दिगणी की प्रेरणा से इन्होंने शिवार्य की भगवती आराधना की 'विजयोदया' नाम की टीका लिखी थी।

इनका अपरनाम श्रीविजय या विजयाचार्य था। पंडित आशाधरजी ने इनका 'श्रीविजय' नाम से ही उल्लेख किया है।

अपराजितसूरि की गुरु-परम्परा देखने से ज्ञात होता है कि इनका समय विक्रम की नवमी शताब्दी का हो सकता है।

रचना-परिचय : आपकी एक ही रचना प्राप्त होती है।

1. विजयोदया टीका : अपराजितसूरि ने शिवार्य की भगवती आराधना की 'विजयोदया' नाम की टीका लिखी है। यह टीका अनेक विशेषताओं को लिये हुए है। इसमें संन्यासमरण या समाधिमरण का विषय विशेष है।